{ खुद के लिए जीने वाले की ओर कोई ध्यान नहीं देता पर जब आप दूसरों के लिए जीना सीख लेते हैं तो वे आपके लिए जीते हैं - परमहंस योगानंद }

सम्पादकीय

वक्फ कानून पर सुनवाई

विरोध के बहाने हुई हिंसा पर सुप्रीम कोर्ट चिंतित

सुप्रीम कोर्ट ने संशोधित वक्फ कानून की सुनवाई करते हुए इस कानून के विरोध के बहाने हुई हिंसा पर चिंता तो जताई, लेकिन अच्छा होता कि वह केवल इतने तक ही सीमित नहीं रहता। उसे वक्फ कानून के विरोध के नाम पर हिंसा करने वालों को सख्त संदेश देने के साथ ही राज्य सरकारों और विशेष रूप से बंगाल सरकार को निर्देश देने चाहिए थे कि इस हिंसा पर हर हाल में लगाम लगे। उसे इसका भी संज्ञान लेना चाहिए था कि मुर्शिदाबाद में वक्फ कानून विरोधियों की भीषण हिंसा के चलते वहां के अनेक हिंदुओं को जान बचाने के लिए पलायन करना पड़ा है और इसका कोई ठिकाना नहीं कि वे अपने घरों को लौट सकेंगे या नहीं? उससे मुर्शिदाबाद की हिंसा पर ध्यान देने की अपेक्षा इसलिए थी, क्योंकि उसके समक्ष इसकी गुहार लगाई जा चुकी है।

वक्फ कानून पर सुनवाई करते समय सुप्रीम कोर्ट ने जहां इस कानून में कुछ सकारात्मक बदलावों का उल्लेख किया, वहीं उसके कुछ प्रविधानों पर सवाल खड़े करते हुए सरकार को नोटिस भी जारी किया। कहना कठिन है कि इन सवालों के जवाब मिलने पर उसका दृष्टिकोण क्या होगा, लेकिन पहली ही सुनवाई के दौरान एक समय उसने अंतरिम आदेश पारित करने का जो संकेत दिया, उसकी आवश्यकता नहीं थी।

वक्फ कानून पर पहले संयुक्त संसदीय समिति में व्यापक चर्चा हुई और फिर संसद के दोनों सदनों में। जिस कानून में महीनों की बहस के बाद संशोधन किए गए हों, उस पर अंतरिम आदेश जारी करने की जल्दबाजी नहीं दिखाई जानी चाहिए।

यह ठीक है कि वक्फ कानून को लेकर 70 से अधिक याचिकाएं दायर की गई हैं, जिनमें अधिकतर उसके विरोध में हैं, लेकिन इसकी अनदेखी न की जाए कि यह एक महत्वपूर्ण कानून है और उसके कुछ प्रविधानों में संशोधन आवश्यक हो गए थे। वक्फ कानून की संवैधानिकता की परख में हर्ज नहीं।

सुप्रीम कोर्ट को ऐसा करना ही चाहिए, लेकिन अंतरिम आदेश देने के पहले दोनों पक्षों के विचार सुनना आवश्यक है। इस आवश्यकता की पूर्ति के साथ ही संसद से पारित किसी कानून का सड़कों पर उतरकर हिंसक तरीके से विरोध करने की प्रवृत्ति को हतोत्साहित भी किया जाना चाहिए। तब तो और भी, जब उस कानून पर सुनवाई हो रही हो।

पिछले कुछ समय से यह प्रवृत्ति बढ़ी है। इसके पहले नागरिकता संशोधन कानून का सड़कों पर उतरकर विरोध किया गया था। इस दौरान अराजकता का भी प्रदर्शन किया गया, लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने उसका यथोचित तरीके से संज्ञान नहीं लिया।

इससे खराब स्थिति तब बनी, जब कृषि कानूनों का उग्र तरीके से विरोध किया गया। ऐसा इसलिए भी हुआ, क्योंकि सुप्रीम कोर्ट ने कृषि कानूनों की वैधानिकता पर विचार किए बिना उनके अमल पर रोक लगा दी थी। अब ऐसा नहीं होना चाहिए।

विश्व विरासत दिवस पर विशेष

सांस्कृतिक एवं प्राकृतिक धरोहरों के संरक्षण की प्रतिबद्धता का प्रतीक है विश्व विरासत दिवस

हमारी सौंदर्यपरक विरासतें हमारी राष्ट्रीय पहचान और सांस्कृतिक समृद्धि को परिभाषित करती हैं। हर विरासत का गौरव तभी बढ़ सकता है जब हम उनकी पहचान को संरक्षित रखें। हमारे स्मारक हमारी प्राचीन सांस्कृतिक जड़ों के सुंदर प्रतिबिंब हैं। मेरी संस्कृति मेरी पहचान और व्यक्तित्व है।

■ प्रकाश चंद्र शर्मा

विश्व धरोहर दिवस अथवा विश्व विरासत दिवस, प्रतिवर्ष 18 अप्रैल को मनाया जाता है। इस दिवस को मनाने का मुख्य उद्देश्य यह भी है कि पूरे विश्व में मानव सभ्यता से जुड़े ऐतिहासिक और सांस्कृतिक स्थलों के संरक्षण के प्रति जागरूकता लाई जा सके। संयुक्त राष्ट्र की संस्था यूनेस्को की पहल पर एक अंतर्राष्ट्रीय संधि की गई जो विश्व के सांस्कृतिक एवं प्राकृतिक धरोहरों के संरक्षण के हेतु प्रतिबद्ध है। यह संधि सन् 1972 में लागू की गई। प्रारंभ में मुख्यत: तीन श्रेणियों में धरोहर स्थलों को शामिल किया गया। पहले वह धरोहर स्थल जो प्राकृतिक रूप से संबद्ध हो अर्थात प्राकृतिक धरोहर स्थल, दूसरे सांस्कृतिक धरोहर स्थल और तीसरे मिश्रित धरोहर स्थल। वर्ष 1982 में इकोमार्क नामक संस्था ने ट्यूनिशिया में अंतर्राष्ट्रीय स्मारक और स्थल दिवस का आयोजन किया तथा उस सम्मेलन में यह बात भी उठी कि विश्व भर में किसी प्रकार के दिवस का आयोजन किया जाना चाहिए। यूनेस्को के महासम्मेलन में इसके अनुमोदन के पश्चात 18 अप्रैल को विश्व धरोहर दिवस के रूप में मनाने के लिए घोषणा की गई। पूर्व में 18 अप्रैल को विश्व स्मारक तथा पुरातत्व स्थल दिवस के रूप में मनाए जाने की परंपरा थी। विश्व धरोहर समिति की एक वर्ष में एक बार बैठक आयोजित होती है ताकि मौजूदा विश्व धरोहर स्थलों के प्रबंधन पर चर्चा की जा सके और देशों से नामांकन स्वीकार कर लिया जा सके।

युनेस्को विश्व विरासत स्थल ऐसे खास स्थानों (जैसे वन क्षेत्र, पर्वत, झील, मरुस्थल, स्मारक, भवन, या शहर इत्यादि) को कहा जाता है, जो विश्व विरासत स्थल समिति द्वारा

चयनित होते है। और यही समिति इन स्थलों की देखरेख युनेस्को के तत्वाधान में करती है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य विश्व के ऐसे स्थलों को चयनित एवं संरक्षित करना होता है जो विश्व संस्कृति की दृष्टि से मानवता के लिए महत्वपूर्ण हैं। कुछ खास परिस्थितियों में ऐसे स्थलों को इस समिति द्वारा आर्थिक सहायता भी दी जाती है।

विश्वभर में 1199 विरासत स्थल घोषित : अब तक (अक्टूबर 2023 तक) पूरी दुनिया में लगभग 1199 स्थलों को विश्व विरासत स्थल घोषित किया जा चुका है जिसमें 933 सांस्कृतिक, 227 प्राकृतिक, 39 मिश्रित (सांस्कृतिक और प्राकृतिक दोनों) स्थल हैं। अभी तक भारत में 43 विश्व विरासत स्थल है। भारत का जनवरी 2024 तक में यूनेस्को शामिल अंतिम स्थल मोइदम है जो अहोम राजवंश का कब्रिस्तान है और असम में स्थित हैं तथा 42वां कच्छ के रन में स्थित धौलावीरा है, जिसे जनवरी 2020 में शामिल किया गया था। यह हड़प्पा कालीन एक नगर था। यूनेस्को द्वारा विश्व विरासत घोषित किए गए भारत में स्थित सांस्कृतिक और प्राकृतिक स्थलों की विश्व हेरिटेज सिटी है अहमदाबाद भारत का पहला हेरिटेज सिटी के रूप में अहमदाबाद को लिया गया था। अहमदाबाद शहर की स्थापना 1411 ई. में सुल्तान अहमद शाह ने की थी। यह शहर साबरमती नदी के तट पर स्थित है। यह शहर भारत में विश्व धरोहर शहर का दर्जा पाने वाला पहला और भक्तपुर (नेपाल) और गाले (श्रीलंका) के बाद एशिया में तीसरा है। वहीं भारत का पहला विश्व धरोहर स्थल अजंता की गुफाएं है। साल 1983 में यूनेस्को ने इन्हें विश्व धरोहर स्थल घोषित किया था। इसके अलावा, एलोरा की गुफाएं, आगरा का किला, और ताजमहल भी इसी साल विश्व धरोहर स्थलों की सूची में शामिल हुए थे। भारत साल 1946 में यूनेस्को का सदस्य बना था। यह संयुक्त राष्ट्र की एक विशेष शाखा है। भारत ने यूनेस्को के संविधान को 4 नवंबर, 1946 को मंजूरी दी थी। अगर यूनेस्को किसी स्मारक या स्थल को धरोहर घोषित करता है तो उसके बाद उस जगह का नाम विश्व में काफी मशहूर हो जाता है। जिस वजह से वहां विदेशी पर्यटकों का आवागमन भी काफी बढ़ जाता है, जिसका लाभ सीधा देश की अर्थव्यवस्था को मिलता है। विश्व धरोहर घोषित होने के बाद उस जगह का खास ध्यान रखा जाता है और उसकी सुरक्षा भी बढ़ा दी जाती है। यदि ये स्मारक ऐसे देश में है, जिसकी आर्थिक स्थिति सही नहीं है, तो यूनेस्को ही स्मारक की देखभाल और सुरक्षा की जिम्मेदारी उठाता है। अंतरराष्ट्रीय स्मारक एवं स्थल परिषद और विश्व संरक्षण संघ ये दो संगठन है, जो इस बात का आकलन करते हैं, कि स्थल विश्व धरोहर बनने लायक है या नहीं। साल में एक बार इस विषय के लिए समिति बैठती है और जगहों का चयन करती है। जगह का चयन करने के बाद दोनों संगठन इसकी सिफारिश विश्व धरोहर समिति से करते हैं। फिर ये फैसला लिया जाता है कि जगह को विश्व धरोहर बनाना है।

विश्व धरोहर दिवस 2025 पर उद्धरण : हमारी सौंदर्यपरक विरासतें हमारी राष्ट्रीय पहचान और सांस्कृतिक समृद्धि को परिभाषित करती हैं। हर विरासत का गौरव तभी बढ़ सकता है जब हम उनकी पहचान को संरक्षित रखें। हमारे स्मारक हमारी प्राचीन सांस्कृतिक जड़ों के सुंदर प्रतिबिंब हैं। मेरी संस्कृति मेरी पहचान और व्यक्तित्व है।

देश/प्रदेश

केयर हेल्थ इंश्योरेंस बनी उत्तर भारत की नंबर 1 हेल्थ इंश्योरेंस कंसल्टेंसी

आर्डेंट कंसल्टेंसी ने मनाया अपना एनुअल प्लानिंग एवं अवार्ड समारोह

आर्डेंट कंसल्टेंसी ने केयर हेल्थ इंश्योरेंस के लिए 10 करोड़ का रीटेल प्रीमियम आंकड़ा पार किया

मॉर्निंग न्यूज @ जयपुर

भारत में तेजी से बढ़ते हेल्थ इंश्योरेंस कंसल्टेंसी में से एक, आर्डेंट कंसल्टेंसी ने गुरुवार को अपने चौथे फाइनेंशियल वर्ष की सफल समाप्ति के अवसर पर अपना एनुअल प्लानिंग और रिकग्निशन अवार्ड्स समारोह बड़े उत्साह के साथ मनाया। इस अवसर पर संस्थापक एवं सीईओ, अनुप्रा शर्मा ने बताया कि कंपनी ने 10 करोड़ से अधिक का रिटेल हेल्थ इंश्योरेंस प्रीमियम प्राप्त कर एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। साथ ही, केयर हेल्थ इंश्योरेंस के लिए उत्तर भारत में नंबर 1 परफॉर्मर के रूप में अपनी स्थिति को दोहराया। 'यह वर्ष आर्डेंट के लिए शानदार रहा है। हमारी प्रमुख प्राथमिकता एजेंट्स की भर्ती और सक्रियता रही जिसमे हमने 100 से अधिक नए एजेंट्स को सफलतापूर्वक जोड़ा और प्रशिक्षित किया तथा हेल्थ इंश्योरेंस के क्षेत्र में उनको जोड़ा।' टीम के मार्गदर्शक एवं प्रेरक हिम्मत सिंह ने बताया, 'साल भर में 20 से अधिक भागीदारों ने अंतरराष्ट्रीय इंसेंटिव ट्रिप के लिए क्वालीफाई किया-सिर्फ जेएफएम तिमाही में ही 11 एजेंट्स ने यह उपलब्धि पाई। यह हमारी टीम की ऊर्जा और प्रतिबद्धता को दर्शाता है।'

समारोह में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले सदस्यों को सम्मानित किया गया जिसमें हर्षित शर्मा को 5 करोड़ के व्यक्तिगत प्रीमियम के लिए शीर्ष परफॉर्मर के लिए अंशुल शर्मा और कोमल शर्मा को उल्लेखनीय प्रदर्शन के लिए; कंपनी की सफलता में महत्वपूर्ण योगदान देने के लिए हरदय शर्मा, राजेश टोडवाल, महेश सोनी, राघव शर्मा, गिरधारी लाल गुप्ता, अमित दीक्षित, कैलाश चंद सैनी, सुखदेव राजपुरोहित और राजेंद्र माथुर सहित कई अन्य सदस्यों को सम्मान किया गया। आगे की योजनाओं पर प्रकाश डालते हुए नितिन हुरकट ने कहा, 'इस वर्ष हम सामाजिक उत्तरदायित्व के तहत कई नए प्रयास करेंगे जिसमें विशेष रूप से, कॉर्पोरेट कर्मचारियों को सीएसआर जैसी जीवनरक्षक तकनीकों का प्रशिक्षण देना हमारी प्राथमिकता में रहेगा।' आर्डेंट कंसल्टेंसी ने नए वित्तीय वर्ष में एजेंट सशक्तिकरण, ग्राहक सेवा और देशभर में स्वास्थ्य जागरूकता बढ़ाने के अपने मिशन को और मजबूत करने का संकल्प लिया।

'सीम्फनी की शुफियाना शाम' भक्ति के रंग में रंगी क्लब की सदस्य

मॉर्निंग न्यूज @ जयपुर। सिम्फनी लेडीज सिंगर्स क्लब की ओर से आयोजित शुफियाना भक्तिमय शाम में क्लब सदस्या हन्नी पालीवाल की होस्टिंग में मेडिटेशन कराया गया। क्लब की अध्यक्षा सरिता काला नें बताया की इस मौके पर प्रोग्राम के तहत शुफियाना भक्ति को भी शामिल किया गया जहां प्रत्येक क्लब मेंबर नें लाइव म्यूजिक के साथ बारी-बारी से अपनी आवाज में 'सत्यम शिवम् सुंदरम, ओ पालन हारे, लगन लागी रे, औ री सखी और अपने ही रंग में जैसे कई भजन और गानों की प्रस्तुति देकर आने वाले सभी मेहमानों को भक्ति के रंग में रंग दिया। साथ ही उन्होंने कहा की वेंन्यु को भी थीम के आधार पर शुफियाना अंदाज से सजाया गया वही आने वाले सभी मेहमानों का स्वागत भी इसी अंदाज में किया गया।

हिस्ट्री फेस्टिवल में हुई 'नर्चरिंग द इनर टीचर' कार्यशाला

मॉर्निंग न्यूज @ जयपुर। महाराजा सवाई मान सिंह द्वितीय म्यूजियम ट्रस्ट की ओर से आयोजित जयपुर हिस्ट्री फेस्टिवल 2025 की शुरुआत बुधवार को मानसिक स्वास्थ्य और वैलबींग विषय पर केंद्रित कार्यशालाओं की श्रृंखला के साथ हुई। इस श्रृंखला के प्रथम सत्र 'नर्चरिंग द इनर टीचर - हाउ एम्ब्रेसिंग योर इनर चाइल्ड कैन ट्रांसफॉर्म योर स्कूल' का आयोजन अशोक क्लब में किया गया। सत्र का संचालन आईसी3 मूवमेंट और अहा मूवमेंट के संस्थापक डॉ. गणेश कोहली ने किया। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि एक प्रभावशाली लीडर बनने और व्यक्तिगत विकास के लिए अपने इनर चाइल्ड से जुड़ना अत्यंत आवश्यक है। डॉ. कोहली ने लेयर्स ऑफ चेंज फ्रेमवर्क के माध्यम से प्रतिभागियों को क्रिएटिविटी, लव, वंडर, ऑप्टिमिज्म और लेटिंग गो जैसे इनर चाइल्ड के गुणों से परिचित कराया। सत्र में जयपुर के 26 स्कूलों के प्रिंसिपल्स समेत कई प्रमुख शिक्षाविद और अतिथि शामिल हुए। कार्यशाला में आत्म-जागरूकता और सचेतनता के लिए व्यावहारिक उपकरणों को साझा किया गया। डॉ. कोहली ने बताया कि जब स्कूल लीडर्स इन सिद्धांतों को अपनी कार्यशैली में अपनाते हैं, तो वे अपने स्कूलों में इमोशनल वेलबींग को मुख्यधारा में लाने में सक्षम हो जाते हैं।

'शाइनिंग इकोस' पुस्तक का विमोचन

बुक में बड़े सपने देखती युवती की कहानी को किया बयां

मॉर्निंग न्यूज @ जयपुर

युवा लेखिका यशिका जैन की ओर से लिखित फिक्शन नॉवेल 'शाइनिंग इकोस' का भव्य विमोचन समारोह उत्साहपूर्वक आयोजित किया गया। इस अवसर के मुख्य अतिथि पवन अरोड़ा रहे, जबकि विशिष्ट अतिथियों के रूप में निर्मला सेवानी और जगदीप सिंह ने कार्यक्रम की गरिमा बढ़ाई। कार्यक्रम का संचालन आकर्षक अंदाज में आशिमा चौधरी और सिद्धार्थ ने किया। यह उपन्यास एक समृद्ध परिवार की युवती की प्रेरणादायक कहानी है, जो बड़े सपने देखती है और उन्हें पूरा करने के लिए कठिन परिश्रम करती है।

जीवन की अनेक रुकावटों और संघर्षों के बावजूद वह अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने का संकल्प नहीं छोड़ती। यशिका जैन पेशे से एक सफल ज्वैलरी डिजाइनर हैं और साहित्य में विशेष रुचि रखती हैं। पुस्तक लेखन के अपने अनुभव को साझा करते हुए उन्होंने कहा कि मैं मानती हूं कि जीवन में आने वाली हर चुनौती का

साहसपूर्वक सामना करना चाहिए। हर दिन कुछ नया सीखने का प्रयास ही हमें आगे बढ़ाता है। 'शाइनिंग इकोस' की लेखन यात्रा मेरे लिए एक नया अनुभव और सीखने की प्रक्रिया रही और मुझे बेहद खुशी है कि मैं इसे पूरा कर सकी। इस पुस्तक का प्रकाशन सिम्पली जयपुर पब्लिकेशन द्वारा किया गया है, जिसकी प्रकाशक हैं अंशु हर्ष। यशिका की यह पहली कृति न केवल पाठकों को प्रेरित करेगी, बल्कि उनके सपनों की ओर अग्रसर होने का हौसला भी देगी।

'असहमति और लोकतंत्र' विषय पर व्याख्यानमाला आयोजित

मॉर्निंग न्यूज @ जयपुर

भारत के पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय चंद्रशेखर की 98वी जयंती के अवसर पर राजस्थान विधानसभा के कांस्टीटयूशन क्लब ऑफ राजस्थान में प्रोग्रेसिव राइटर्स क्लब एसोसिएशन की ओर से 'असहमति और लोकतंत्र' विषय पर व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के आयोजक और प्रोग्रेसिव राइटरस क्लब एसोसिएशन के अध्यक्ष लोकेश कुमार सिंह 'साहिल' ने बताया कि व्याख्यानमाला का शुभारम्भ, मुख्य वक्ता बिहार के राज्यपाल, आरिफ मोहम्मद खान, पूर्व सांसद और समाजसेवी नेता, पंडित रामकिशन (समारोह अध्यक्ष), सिविल लाइंस विधायक गोपाल शर्मा और पूर्व नेता प्रतिपक्ष, राजेंद्र राठौड़ द्वारा स्वर्गीय चंद्रशेखर की तस्वीर पर पुष्प अर्पण कर किया गया। कार्यक्रम में साहित्यकारों, पत्रकारों और प्रबुद्धजनों की बड़ी संख्या में उपस्थिति रहे।

इससे पूर्व लोकेश कुमार सिंह साहिल द्वारा सूत की माला और तिरंगा अंगवस्त्र पहना कर स्वागत किया गया। बिहार के राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान ने उदबोधन में भारत के पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय चंद्रशेखर को श्रद्धांजलि देते हुए उनसे जुडी कई रोचक कहानियां साझा की और 'असहमति और लोकतंत्र' व्याख्यान में बताया कि, ये दोनों ही एक-दूसरे से जुड़े हैं। लोकतंत्र में, लोगों को राय व्यक्त करने और सरकार के प्रति विरोध व्यक्त करने का अधिकार है।